अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

तत्त्वज्ञान (वर्ष : 2023) दिनांक : 22.08.2023

समय सीमा : 3 घंटा तृतीय वर्ष : द्वितीय प्रश्न पत्र पूर्णांक : 100

नव पदार्थ (पुण्य-पाप)–50

प्र. 1. किन्हीं आठ प्रश्नों के उत्तर लिखें– 16

पुण्य–किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर लिखें–

(क) आचार्य भिक्षु ने पुण्य जनित कामभोगों को विष-तुल्य क्यों कहा है?

(ख) तैजस व कार्मण शरीर के अंगोपांग क्यों नहीं होते?

(ग) ठाणं सूत्र के अनुसार अशुभ दीर्घायुष्य के कितने व कौन-कौन से हेतु हैं?

(घ) अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग से क्या तात्पर्य है?

(ङ) जीव अकर्कश वेदनीय कर्म का बंध कैसे करते हैं?

(च) वैयावृत्य का आगमिक अर्थ क्या है?

पाप–किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखें–

(छ) सम्यक् मिथ्यात्व और सम्यक्त्व मोहनीय को पाप प्रकृतियों में क्यों नहीं लिया गया?

(ज) ठाणं सूत्र के दूसरे स्थान के अनुसार अन्तराय कर्म के भेदों को स्पष्ट करें।

(झ) ठाणं सूत्र में वेदना के दो प्रकार कौन से बताए गये हैं–स्पष्ट करें।

(ञ) विहायोगति किसे कहते हैं?

प्र. 2 निम्न प्रश्नों के उत्तर लिखें– 10

(क) **पुण्य–**योग किसे कहते हैं? सिद्ध करें कि पुण्य निरवद्य योग से होता है?

अथवा

कल्याणकारी कर्मों के बंध हेतुओं का उल्लेख करें।

(ख) पाप–सिद्ध करें कि पाप स्वयंकृत हैं।

अथवा

मोहनीय कर्म के स्वभाव व उसके भेदों का उल्लेख करें।

प्र. 3 निम्न प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक लिखें– 24

(क) पुण्योदय से कौन-कौन से सुखों की प्राप्ति होती है?

अथवा

निदान कर्म का क्या फल होता है।

(ख) नीच गोत्र कर्म पर प्रकाश डालें।

अथवा

जीव कर्म ग्रहण कैसे करता है?

अवबोध–30

प्र. 4 किन्हीं छह प्रश्नों के उत्तर लिखें– 6

(क) चौदहवें गुणस्थान में कौन-सी निर्जरा मानी गई है?

(ख) उपशम भाव निर्जरा में सहयोगी कैसे बनता है?

(ग) क्या बंध की स्वतन्त्र क्रिया है?

(घ) बंध और पुण्य-पाप में क्या अन्तर है?

(ङ) समुद्र में सिद्ध होने वाले चरम शरीरी जीव कहां से आते हैं?

(च) क्या क्षायक सम्यक्त्वी देवता के तीर्थंकर गोत्र का बंध हो सकता है?

(छ) नौ ग्रैवेयक देवलोक के विमानों की संख्या कितनी है?

(ज) सिद्धशिला पर जब सिद्ध नहीं रहते, फिर इसे सिद्धशिला क्यों कहते हैं?

प्र. 5 किन्हीं छह प्रश्नों के उत्तर लिखें– 12

(क) क्या एकेन्द्रिय जीवों के निर्जरा होती है?

(ख) निर्जरा तथा पुण्य का बंध–कौन सा भाव? कौन सी आत्मा?

(ग) बंध किसे कहते हैं? क्या बंध से पूर्व कर्मवर्गणा ज्ञानावरण आदि प्रकृतियों में विभक्त होती है?

(घ) सिद्धशिला क्या है और कहां पर है?

(ङ) क्या सिद्धों में प्राण और पर्याप्ति है?

(च) तीर्थ प्रवर्तन से पूर्व भी क्या कोई मोक्ष जा सकता है?

(छ) लोकान्तिक देव कौन होते हैं? क्या वे सम्यक्त्वी ही होते हैं?

(ज) देवों में क्षयोपशम के कितने प्रकार हैं?

प्र. 6 किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखें– 12

(क) असुरकुमार देवों की स्थिति कितनी है?

(ख) व्यन्तर, ज्योतिष्क और वैमानिक देवों के कितने इन्द्र हैं?

(ग) एकेन्द्रिय में भी क्या एकाभवतारी जीव होते हैं?

(घ) तीन लोक (उर्ध्व, अधो और मध्य) में कहां से मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है?

(ङ) निर्जरा तो आठों कर्मों की होती है, फिर वर्णन केवल चार घातिक कर्मों की निर्जरा से प्राप्त गुणों का ही क्यों आता है?

गीतिका (दस दान, अठारह पाप)–20

प्र. 7 कोई चार पद्य अर्थ सहित लिखें– 16

(क) लेणात ने .....नाम ए।

(ख) आरंभ कीयां.....लिगार ए।

(ग) जो थोड़ो.....सरधियो ए।

(घ) दाता ने .....उतारसी ए।

(ङ) जो मिले.....नही ए।

प्र. 8 किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखें– 4

(क) संग्रह दान से क्या तात्पर्य है?

(ख) दान देते समय कौन सी तीन चीजें शुद्ध होने से बड़ा लाभ मिलता है?

(ग) कौन व्यक्ति धर्म-अधर्म के न्याय को नहीं पहचानता?

(घ) किन आगमों के आधार पर व्रत-अव्रत का पृथक्करण किया गया है?

(ङ) तत्त्व किसे समझ में नहीं आता है?